www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समाज-सेवा को ही धर्म मानने वाले—
महादेव गोविन्द रानाडे

44

47



लेखक :—

श्री सत्यभक्त

सुगम निर्माण योजना मथुरा

Free Read / Download & Order 500 + books at the end of Yugrishi Pt. Shri Ram Sharma Pandey of All World Gayatri Pariwar on all Sections of the mysterious Scientific Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समाज सेवा को ही धर्म माननेवाले महादेव गोविन्द रानाडे

श्री महादेव गोविन्द रानाडे एक बार कोल्हापुर (महाराष्ट्र) में जज के पद पर कुछ समय के लिये नियुक्त किये गये। संयोग से इसी नगर में उनके पिता कई वर्ष तक रह चुके थे और उनका अनेक व्यक्तियों से घनिष्ठ परिचय था। इसलिये जब रानाडे वहाँ पर जज नियुक्त हो गये तो अनेक लोग उनके पिता के पास आने लगे कि वे उनके मामले-मुकदमे में उनकी सिफारिश कर दें। किन्तु पिता को तो पुत्र का स्वभाव अच्छी तरह मालूम था, इसलिये वे ऐसे लोगों को सदा टाल दिया करते थे। पर एक बार कोई व्यक्ति जो उनका परिचित ही नहीं था, वरन् दूर के रिश्ते में सम्बन्धी भी लगता था, उनके पीछे पड़ गया। वह एक प्रतिष्ठित व्यक्ति था और किसी बड़े झगड़े में फँस गया था। वह अच्छी तरह जानता था कि रानाडे वस्तुतः न्याय-मूर्ति हैं और वे कभी किसी का पक्ष नहीं करेंगे। इसलिये उसने उनके पिता को ही घेरा और कहा--"इस मुकदमे के कारण मैं बड़ी द्विविधा में हूँ, और इसीलिये आपको कष्ट देने आया हूँ। मैं यह नहीं कहता कि मेरे लिये किसी के साथ अन्याय किया जाय। मैं तो इतना ही चाहता हूँ कि रानाडे एक बार मेरे कागजात को अच्छी तरह देख लें, तब मुकदमे का फैसला करें।"

उस मनुष्य ने इतनी अनुनय-विनय की कि अन्त में रानाडे के पिता को उस पर दया आ गई। उन्होंने अपने मन में सोचा कि मैं किसी के साथ पक्ष-पात करने को तो कह नहीं रहा हूँ। यह आदमी केवल अपनी बात उनको सुना देना चाहता है, तो इसमें क्या हर्ज है? इस प्रकार सोच-विचार कर वे उस व्यक्ति को लेकर रानाडे के कमरे में चले गये। वे इन दोनों को देखकर उठ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

खड़े हुये और विनयपूर्वक प्रणाम किया। कुछ ठहरकर पिताजी ने कहा—'बेटा ! यह तुमसे कुछ कहना चाहते हैं, इनकी बात सुनलो।'

पर रानाडे ने इसका कुछ भी उत्तर नहीं दिया तब उस व्यक्ति ने कहा— "मैं आपको अपने कागज-पत्र दिखाना चाहता हूँ। अभी मैं उन्हें नहीं लाया। यदि आपको अवसर हो तो ले आऊँ ?"

रानाडे ने बड़ी नम्रता से उत्तर दिया—"जी नहीं, आज मुझे बहुत काम करना है। आप आज चले जायें। जब मुझे अवसर होगा तो मैं आपको सूचना दूँगा।"

जब वह सज्जन चले गये तो रानाडे ने बहुत विनय के साथ किन्तु स्पष्ट शब्दों में पिताजी से कहा कि—"मैं जानता हूँ कोल्हापुर के सभी लोग आपके परिचित हैं। वे सभी अपने मुकदमों में आपसे सिफारिश कराना चाहेंगे। आप किस प्रकार सबके मन की बात पूरी कर सकेंगे ? इसलिये इस सम्बन्ध में अच्छी तरह विचार कर लीजिये, अन्यथा विवश होकर मुझे यहाँ से बदली करा लेनी पड़ेगी।"

रानाडे की पितृभक्ति—

श्री रानाडे (सन् १८४० से १९०१) बड़े पितृभक्त थे। वे सब तरह की कठिनाइयाँ सहन करके भी उनकी आज्ञा का पालन करते थे। जब रानाडे की पहली पत्नी का देहान्त हुआ तो उनकी अवस्था केवल ३१ वर्ष की थी। वे आरम्भ से ही समाज-सुधार के विचार रखते थे और महाराष्ट्र में उन्होंने विधवा-विवाह के लिये बहुत कुछ प्रयत्न भी किया था। उन्होंने इस सम्बन्ध में एक बड़ा निबन्ध लिखा था जिसमें लौकिक और शास्त्रीय युक्तियों द्वारा अच्छी तरह सिद्ध किया गया था कि विधवा-विवाह होना समाज कल्याण की दृष्टि से अत्यावश्यक है और वैदिक काल में विधवा विवाह होते थे। वे विधवाओं की दुर्दशा देखकर बड़े दुःखी होते थे और अनेक बार उनके कष्टों को सुनकर उनके नेत्रों में आँसू भर आते थे।

इसलिये पत्नी की मृत्यु के पश्चात् स्वाभाविक था कि वे अपना विवाह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किसी विधवा के साथ करें। उनके सुधारक मित्र भी इसी बात पर जोर दे रहे थे। पर कठिनाई यह थी कि उनके सभी घर वाले और पिता पुराने विचारों के थे और विधवा-विवाह को घोर पाप मानते थे। इसलिये रानाडे की पत्नी की मृत्यु के पश्चात् ही उनके पिता, विवाह के लायक किसी कन्या की खोज करने लग गये। यह देखकर रानाडे बड़े दुःखी हुये और उन्होंने अपने पिता से कहा—

"पिता जी ! क्षमा कीजिये, अब मैं विवाह नहीं करूँगा। मेरी अवस्था इस समय लगभग ३२ वर्ष की है। इसलिये अब मैं छोटा नहीं हूँ। फिर समझ में नहीं आता कि आप मेरे विवाह की इतनी चिन्ता क्यों कर रहे हैं ? मेरी छोटी बहिन दुर्गा की दशा इस समय शोचनीय है। वह २० वर्ष की अवस्था में ही विधवा हो गई थी। जब आप दुर्गा की कुछ भी चिन्ता नहीं करते, तो समझ में नहीं आता कि मेरे विवाह के लिये इतनी चिन्ता क्यों कर रहे हैं ? कदाचित् आप डर रहे हैं कि मैं किसी विधवा से विवाह कर लूँगा, जिससे आपके वंश की 'अपकीर्ति' होगी। किन्तु मैं आपके सम्मुख प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं ऐसा कभी कहीं करूँगा।"

जब रमाबाई के पिता अपनी कन्या के लिये रानाडे को देखने आये तो उन्होंने उनसे कहा— "मैं तो विधवा विवाह का पक्षपाती हूँ और विदेश-यात्रा का भी विचार कर रहा हूँ। आप क्यों अपनी कन्या का मुझसे विवाह करना चाहते हैं ? इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि मेरी आँखों और कानों में खराबी आ गई है और भी कई त्रुटियाँ उत्पन्न हो गई हैं। इसलिये आप इन सब बातों पर सोच-विचार करके अपनी कन्या का विवाह करने का निश्चय कीजियेगा।"

इस प्रकार रानाडे ने हर तरह से यह चेष्टा की कि उनको विवाह न करना पड़े, पर उनके पिता बराबर अपनी बात पर डटे रहे और रानाडे पर उनकी इच्छानुसार विवाह करने के लिये दबाव डालते रहे। अन्त में जब उन्होंने देखा कि रानाडे किसी प्रकार नहीं मानते तो उन्होंने कहा—"बेटा, मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी बात मान लो। अगर तुम न मानोगे तो मैं करवीर चला जाऊँगा, आगे ईश्वर मालिक है।" करवीर साधुओं का निवास स्थान था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रानाडे के पिता का अभिप्राय संन्यासी हो जाने से था ।

रानाडे यह सहन नहीं कर सकते थे कि जिन पिता ने उनको जन्म दिया और स्वयं कष्ट सहन करके पाला-पोसा, वे उनके कारण इतना दुःख सहन करें । इतना ही नहीं, उनकी ताई और बहिन आदि, जो इन्हीं के साथ रहती थीं वे भी पुराने विचारों की स्त्रियाँ होने से विधवा--विवाह का नाम भी न लेना चाहती थीं । इस प्रकार श्री रानाडे देखा कि एक विधवा-विवाह के कारण उनका समस्त परिवार अस्त-व्यस्त हो जायगा और उनके आश्रित सभी परिजनों को उनसे पृथक रहकर कष्ट भोगना पड़ेगा । दूसरी ओर वे देश के प्रसिद्ध सुधारक माने जाते थे और बम्बई में श्री केशवचन्द्र सेन द्वारा स्थापित 'प्रार्थना समाज' के संचालक भी वे ही थे । ऐसी दशा में वे विधुर होकर किसी विधवा के बजाय कन्या से विवाह करते तो निश्चय ही उनके अनुयायिओं पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता और विरोधियों को आक्षेप करने का खुला मौका मिल जाता ।

फिर भी रानाडे की मानवता इतनी बढ़ी-चढ़ी थी कि उन्होंने स्वयं बदनाम हो जाना मंजूर कर लिया पर अपने बुजुर्गों को कष्ट देना अथवा निराश्रित कर देना पसन्द न किया और अपने पिता के आदेश को भगवान राम की इस उक्ति पर ध्यान दे कर स्वीकार कर लिया ।

अनुचित उचित विचार तजि, जे पालहिं पितु बैन ।
ते भाजन सुख सुयश के, बसहि अमरपति ऐन ।।

इसमें सन्देह नहीं कि श्रीमती रमाबाई से विवाह करने के पश्चात् श्री रानाडे को अनेक लोगों के आक्षेप सहन करने पड़े । कुछ समय बाद जब बम्बई में विधवा विवाह के सम्बन्ध में एक सभा हुई और रानाडे को उनकी योग्यता तथा प्रभाव के कारण उसका सभापति नियुक्त किया गया तो एक सज्जन ने उठकर कहा--"इसमें तो कुछ भी सन्देह नहीं कि रानाडे विधवा विवाह का समर्थन करते हैं, परन्तु अवसर आने पर भी उन्होंने स्वयं वैसा क्यों न किया ? इन्होंने समाज में आदर्श स्थापित नहीं किया । इन्हीं रानाडे ने, जो आज इस सभा के सभापति हैं, इस सम्बन्ध में सब बातों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को चौपट कर दिया।"

रानाडे ने विनयपूर्वक कहा--"मैं पिताजी की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सका। आप लोग मेरी इस दुर्बलता को क्षमा कर दीजिये और समाज सुधार के प्रश्नों को लेकर आगे बढ़िये।"

सज्जनों का यही लक्षण है। वे अपने छोटे से दोष का उत्तरदायित्व भी स्वयम् वहन करते हैं, और दूसरों को उससे बचाने का ही प्रयत्न करते हैं। रानाडे उन महामानवों में से थे जो मार्ग में आने वाली कठिनाइयों और यातनाओं से न तो मुंह मोड़ते हैं और न उनको बुरा कहते हैं। वे अच्छी तरह जानते थे कि इस संसार में 'होम करते हाथ जलना' वाली कहावत अधिकांश में सत्य ही है। पर जिस प्रकार हाथ जलने के भय से धर्मनिष्ठ व्यक्ति होम करना नहीं छोड़ देता उसी प्रकार सज्जन पुरुष भी कठिनाइयों और निंदा का सामना करने पर भी सेवा व्रत से नहीं हट सकते। श्री रानाडे को इस विशेषता के सम्बन्ध में माननीय गोखले ने एक बार कहा था—

"हम सब जानते हैं कि रानाडे अपने सामने जो आदर्श रखते थे उसके प्रति वह कितने ईमानदार थे, पर इसके लिये उन्हें जो कीमत चुकानी पड़ी वह भी कम न थी। उन्होंने आराम की जिन्दगी त्याग दी थी। लेकिन मैं उसका जिक्र नहीं करता क्योंकि जितनी हँसी-खुशी के साथ उन्होंने जीवन का भार वहन किया उस तरह बिरले ही करते हैं। फिर रानाडे ने तो कभी चैन की साँस लेने की बात नहीं सोची। मैं उस मानसिक पीड़ा की चर्चा करना चाहता हूँ, जो उन्हें अक्सर बरदाश्त करनी पड़ती थी। रानाडे को अनेक क्षेत्रों में संघर्ष का सामना करना पड़ा था और उससे पैदा होने वाली पीड़ाओं को सहना पड़ा था। इस सम्बन्ध में एक बार रानाडे ने स्वयं कहा था कि हमें अपनी यातनाओं को सहज ढंग से स्वीकार करना चाहिये। इसलिये नहीं कि पीड़ित होना कोई सुख की बात है, बल्कि इस लिये कि पीड़ा और यातना हमारे महान उद्देश्यों के सामने कुछ भी नहीं हैं।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्री रानाडे जैसे लोकमान्य नेता के लिये अपने किसी सिद्धांत से हट जाना साधारण बात नहीं थी। इसका प्रभाव उनके सम्मान तथा जनता में उनकी मान्यता पर पड़ना निश्चित था। जो लोग नित्य नये-नये रंग बदला करते हैं और स्वार्थसिद्धि को सिद्धान्त से अधिक महत्त्वपूर्ण समझते हैं, उनकी तो कोई बात नहीं। उनके परिचित व्यक्ति भी उनको उसी दृष्टि से देखते हैं और इस लिये उनके उल्टे-सीधे कामों पर ज्यादा ध्यान नहीं देते। पर रानाडे जैसे व्यक्तियों को, जिनको लाखों मनुष्य आदर्श के रूप में देखते हैं और जिनकी सत्यता पर उनका अटल विश्वास होता है, अपने मार्ग से जरा भी हटते देखकर उनकी चर्चा और आलोचना होने लग जाती है। रानाडे अच्छी तरह जानते थे कि विधवा के बजाय किसी कुमारी से विवाह कर लेने पर उन्हें अपने सुधारक मित्रों के आक्षेप सहन करने पड़ेंगे। पर वे इतने सहृदय थे कि किसी को अपने कारण कष्ट देना सहन नहीं कर सकते थे। इसलिये उन्होंने विवाह के सम्बन्ध में घर वालों का आग्रह, उचित न समझते हुये भी, मान लिया और उसके फलस्वरूप होने वाली कटु-आलोचनाओं—यातनाओं को स्वयं सहन कर लिया।

देश सेवा के लिये जीवन समर्पित—

रानाडे के चरित्र का सबसे बड़ा गुण यह माना गया है कि उन्होंने अपना जीवन देश के लिये उत्सर्ग कर दिया था। भारत की 'राष्ट्रीय कांग्रेस' के संचालक श्री० ह्यूम का कथन था कि "भारतवर्ष में अगर कोई ऐसा व्यक्ति है कि जो रात-दिन—चौबीस घण्टे अपनी मातृभूमि की चिन्ता करता है तो वह महादेव गोविन्द रानाडे हैं।" वास्तव में यह जानकर आज भी हमको आश्चर्य होता है कि एक उच्चपदस्थ सरकारी कर्मचारी होने पर भी, उन्होंने किस प्रकार देश के राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्र में इतना महत्त्वपूर्ण कार्य कर दिखाया। वे कांग्रेस के जन्म समय से ही उसका कार्य-संचालन करते आये थे और जब तक जीवित रहे उसके प्रत्येक अधिवेशन में सम्मिलित रहकर अपने गम्भीर ज्ञान से उसका मार्ग दर्शन करते रहे।

हम यह भी जानते हैं कि इस प्रकार राजनीतिक कार्यों में भाग लेने से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सरकार उनसे अप्रसन्न रहती थी और इस कारण उनकी पदोन्नति बराबर देर से होती रही। जब नियमानुसार उनको हाईकोर्ट का जज नियुक्त करने का समय आ गया तब भी सरकार ने उनको वह पद नहीं दिया और उनके बजाय एक अन्य भारतीय श्री काशीनाथ त्र्यंबक तैलंग को जज बना दिया। कुछ वर्ष बाद फिर जज का स्थान खाली होने पर भी सरकार ने उनको पद देने के बजाय अन्य दो व्यक्तियों को उसपर नियुक्त करना चाहा। पर उन दोनों ने इस कार्य को अनुचित तथा अन्याय-पूर्ण समझकर स्वयं उसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया। तब विवश होकर सरकार को उन्हें जज के पद पर नियुक्त करना पड़ा।

जो व्यक्ति लौकिक सफलता के लिये भले-बुरे सब तरह के कर्म करने को उद्यत हो जाते हैं, आर्थिक लाभ के लिये सिद्धान्त को उठाकर ताक पर रख देते हैं और यश तथा पदवी के लोभ से, एक पक्ष को त्यागकर दूसरे पक्ष में चले जाने में कुछ भी संकोच नहीं करते, उनको रानाडे के चरित्र से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। कुछ तात्कालिक लाभ उठा लेना अथवा दल बदलकर मन्त्री आदि का पद प्राप्त कर लेना कोई महत्त्वपूर्ण बात नहीं है, यह तो सचाई और ईमानदारी को बेचकर चाँदी के कुछ टुकड़े प्राप्त करने के समान है। ऐसे व्यक्तियों को यश और प्रतिष्ठा मिलना तो दूर, लोग उनके मुँह पर और पीछे उनकी निन्दा करने से नहीं चूकते। पर हम लोगों के चरित्र और नैतिकता का स्तर इतना गिर गया है कि इन बातों में न किसी को संकोच होता है और न लज्जा का अनुभव करते हैं। पर रानाडे ने हाईकोर्ट की जजी के लिये भी समाज-सेवा के कार्य को नहीं छोड़ा और इसके कारण अन्य प्रकार से भी समय-समय पर अनेक विघ्न-बाधाओं का सामना करते रहे।

कालेज के अध्यक्ष से अनबन--

इस मनोवृत्ति का परिचय रानाडे ने छोटी आयु में भी दिया था, जब वे बम्बई के एलफिन्स्टन कालेज में पढ़ते थे। एक बार कालेज के प्रिंसपल श्री ग्रांट ने अपने विद्यार्थियों से अंग्रेजी राज्य और मराठों के राज्य-शासन की तुलना करके एक निबन्ध लिखने को कहा। सभी विद्यार्थियों ने अंग्रेजी राज्य के गुणों का वर्णन किया। परन्तु रानाडे ने कई प्रकार की दलीलों से यह सिद्ध करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रानाडे भारतीय व्यवसाय वाणिज्य की उन्नति के लिये केवल एक संस्था की स्थापना करके और उसके सामने कुछ लेख पढ कर ही संतुष्ट नहीं हो गये, वरन् उन्होंने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करके स्वदेशी को अपनाने की सम्मति सबसे पहले प्रकट की। उन्होंने इस कार्य को श्री गोखले के सिपुर्द किया, जिन्होंने स्वदेशी-व्यवहार का एक प्रतिज्ञापत्र छपवाकर अनेक व्यक्तियों से उस पर हस्ताक्षर कराये। इस प्रकार रानाडे ने स्वदेशी आन्दोलन का बीजारोपण उस समय किया जब कि देश में इसकी कहीं चर्चा न थी और लोग नई-नई सस्ती और आकर्षक विदेशी वस्तुओं पर लट्टू हो रहे थे। इसके दस पन्द्रह वर्ष पश्चात् जब बंग-भंग के कारण बंगाल और अन्य प्रांतों में 'स्वदेशी आन्दोलन' ने जोर पकड़ा तो श्री-रानाडे के प्रस्ताव का महत्व सब की समझ में आया।

रानाडे के इस कार्य के महत्व को श्री गोखले अच्छी तरह समझते थे। और वे भी भारत की शासन सभाओं में भारतीय उद्योग-धन्धों की रक्षा के लिये बराबर प्रयत्न करते रहते थे। श्री रानाडे के देहावसान के पश्चात् उन्होंने स्मारक के लिये उद्योग करके पूना में ही १ लाख रुपया एकत्रित किया और उसके द्वारा "रानाडे इण्डस्ट्रियल एण्ड इकनामिक इन्स्टीट्यूट" (रानाडे औद्योगिक और आर्थिक संस्थान) की स्थापना की। इसका प्रथम उद्देश्य तो एक ऐसा पुस्तकालय स्थापित करना था जिसमें भारत से सम्बन्धित आर्थिक समस्याओं पर सर्वोत्तम ग्रन्थों और अन्य सामग्री का संग्रह किया जाय। इस पुस्तकालय द्वारा अर्थशास्त्र के विद्वानों को अपने विषय के अध्ययन की पूरी सुविधा मिलती थी, जिससे वे उपयोगी ग्रन्थों की रचना कर सकते थे। दूसरा उद्देश्य था एक ऐसी वैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित करना, जिसमें भारतीय उद्योग-धन्धों में सहायता पहुँचाने वाले आविष्कार किये जा सकें।

यह दोनों ही लक्ष्य श्री रानाडे के जीवन-आदर्श के अनुकूल थे। श्री गोखले के प्रयत्न से यह दोनों कार्य आरम्भ कर दिये गये, पर इनमें जैसी चाहिये वैसी सफलता न मिली। कारण यह था कि श्री गोखले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को वैज्ञानिक प्रयोगशाला के लिये आवश्यक उपकरणों की लागत की जानकारी न थी। यह कार्य इंगलैंड और अमेरिका में भी बहुत धन व्यय-साध्य समझा जाता है और प्रायः सरकारी सहायता से ही संचालित किया जाता है। श्री गोखले को यह भी आशा थी कि इस कार्य में सरकार और म्युनिस्पैलिटी आदि से पर्याप्त सहायता मिल सकेगी, पर तत्कालीन अँगरेजी सरकार भारतीय उद्योगों की वृद्धि के पक्ष में नहीं थी, इसलिये वह इस संस्था को सहायता देने के प्रश्न को टालती ही रही। इस संस्था का उद्घाटन बम्बई के गवर्नर ने सन् १९१० में किया था और तब से उसमें एक-दो विज्ञान के ग्रेजुएट कुछ खोज कार्य करने लग गये। आरम्भ के कुछ वर्षों में उन्होंने सीमेन्ट बनाने के कई नये पदार्थों और चमड़ा कमाने के अन्य साधनों की खोज की। यद्यपि धन की कमी से यह काम बहुत थोड़ा ही हो सका पर इसने देश वासियों को राष्ट्रीय उत्थान की सही दिशा का बोध कराया और इसके पश्चात् शीघ्र ही 'ताता एण्ड सन्स' जैसे धनपतियों ने बड़े परिमाण में यह कार्य आरम्भ किया।

धार्मिक विचार और विश्वास—

यद्यपि रानाडे एक पुराने विचारों के महाराष्ट्रीय ब्राह्मण परिवार के सदस्य थे और उनकी जाति वाले प्रायः अपनी धार्मिक कट्टरता के लिये प्रसिद्ध हैं, पर वे स्वयं एक स्वतंत्र विचारों के व्यक्ति थे। यद्यपि वे धर्म और ईश्वर पर विश्वास रखने वाले थे और इनके समर्थन में उन्होंने एक बहुत अच्छी पुस्तक भी लिखी है, पर वे अंधविश्वासों तथा हानिकारक रूढ़ियों के विरोधी थे। वे किसी धर्म-पुस्तक को ईश्वर रचित अथवा आप्त वाक्य नहीं मानते थे। वे चमत्कारों और अद्भुत कार्यों में में भी विश्वास नहीं रखते थे। उनका कहना था कि चमत्कारों का कारण हमारी बुद्धि में भ्रम हो जाना ही होता है। अन्यथा प्रकृति के नियम अखंड हैं, वे कभी नहीं टूट सकते।

वे मोक्ष में विश्वास करते थे, पर यह भी कहते थे कि मनुष्य अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रयत्नों से ही उसे प्राप्त कर सकता है। यह सम्भव नहीं कि हमारी मोक्ष के लिये कोई अन्य प्रयत्न कर सके। साथ ही यह भी उपहास योग्य बात है कि कोई आदमी किसी अन्य को धन भेंट देकर मोक्ष को खरीद सकता है। इस प्रकार वे पण्डा-पुरोहितों के धन्धे के विरुद्ध थे, क्योंकि इनका आधार अंध-विश्वास पर ही है और ये लोग धनोपार्जन के लिये सामान्य लोगों को बहका कर निरर्थक रूढ़ियों के पालन की प्रेरणा देते ही रहते हैं। इन रूढ़ियों में से अधिकांश अब समय के अनुकूल नहीं रही हैं। कितनी ही तो स्पष्टतः हानि-कारक भी होगई हैं फिर भी जिन लोगों का उनके द्वारा स्वार्थ-साधन होता है वे उनको कायम रखने के लिये सदैव एडी-चोटी का पसीना एक करते रहते हैं। यदि कोई उनको हटा कर समयानुकूल रीति रिवाज ग्रहण करने की प्रेरणा करता हैं तो यह उसके भी विरोधी बन जाते हैं।

यह सब होने पर भी उनको धर्म-विरोधी या नास्तिक नहीं कह सकते। वे कहते थे कि संसार में अनेक ऐसे विषय हैं जिन्हें हमारी परिमित बुद्धि हल नहीं कर सकती। संसार की उत्पत्ति, ईश्वर और उसकी सृष्टि ऐसी ही बातें हैं। इसलिये हमको इन बातों के सत्य या गलत होने के विवाद में न पड़कर सत्कर्म करते रहने का ध्यान रखना चाहिये। सत्कर्मों का आचरण करने वाले को कभी परिताप या संताप नहीं उठाना पड़ता।

मूर्तिपूजा को वे वैदिक सिद्धांत के अनुकूल नहीं मानते थे। वे कहते थे कि वेदों में कहीं भी मूर्तिपूजा का उल्लेख नहीं हैं। वहाँ इन्द्र, अग्नि, मरुत आदि देवों की पूजा यज्ञ--कर्म द्वारा करने को ही बतलाया गया है। बुद्ध और जैन धर्मावलम्बी अपने सिद्धों और साधुओं की पूजा किया करते थे, उन्हीं का अनुकरण करके यह प्रथा भारत के हिन्दुओं ने भी ग्रहण कर ली।

वास्तव में रानाडे बुद्धिवादी सिद्धान्त पर चलने वाले थे, और इसलिये ईश्वर के नाम पर पूजा-पाठ करने की अपेक्षा सत्कर्म और परोपकार करने पर अधिक विश्वास रखते थे। पूजा-पाठ करने वालों में भी दुष्कर्मी मनुष्यों की कमी नहीं होती और 'धर्म' के नाम पर तो अनेक लोगों ने ऐसे-ऐसे नारकीय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर्म और हत्याकाण्ड किये हैं, जिनका स्मरण करके आज भी मनुष्य काँप उठते हैं। इसलिये सच्चा धर्म यही है कि अपने द्वारा बिना भेदभाव के अधिक से अधिक जितने मनुष्यों का हित हो सके उतना किया जाय। इसलिये रानाडे ने एक स्थान पर कहा—

"सम्पूर्ण धर्मों का सार यही है कि हर एक व्यक्ति को अपना चित्त इतना शुद्ध रखना चाहिये कि मित्रों की संख्या बढ़ती जाय और शत्रु कम होते जायें। इसी को शास्त्रों में मैत्री-भाव कहा है।"

'यह समझना कि मानव-जीवन और कुछ नहीं केवल एक स्वप्न है, एक प्रकार की नास्तिकता है। क्योंकि जो व्यक्ति जीवन को इस प्रकार निस्सार या काल्पनिक समझेगा वह कभी सत्कर्म नहीं कर सकेगा।"

"प्राचीन काल से हम सर्वथा पृथक नहीं हो सकते। अपनी प्राचीनता के भाव से हमको दूर होना भी नहीं चाहिये, क्योंकि वह एक बहुमूल्य सम्पत्ति है।"

"प्रत्येक भारतवासी को यह समझना चाहिये कि पहले मैं भारतीय हूँ और उसके बाद हिन्दू, ईसाई, पारसी अथवा मुसलमान आदि और कुछ।"

श्री रानाडे के इन विचारों पर मनन करने से प्रतीत होता है कि वे अपने आदर्श और सिद्धान्तों के प्रति कितने ईमानदार थे। बाह्य पूजा-पाठ की अधिकता कभी भी धार्मिक होने का प्रमाण नहीं हो सकती। इसके विपरीत जहाँ तक देखा गया है इस प्रकार के व्यक्ति प्रायः अपने सार्वजनिक कर्तव्यों के प्रति उपेक्षा रखने वाले सिद्ध होते हैं।

रानाडे के उदार सिद्धान्त—

श्री रानाडे 'प्रार्थना-समाज' के सदस्य थे जो कलकत्ते की 'ब्राह्म-समाज' का मराठी रूपान्तर था। 'ब्रह्म-समाजी' बड़े आधुनिकतावादी समझे जाते हैं और आरम्भ में तो पंडितों ने उनको हिन्दुओं से पृथक ही कर दिया था। बम्बई में 'प्रार्थना-समाज' वाले वैसी स्थिति को तो नहीं पहुँचे तो भी प्राचीन विचारों वाले उनको धार्मिक किसी प्रकार नहीं मानते थे। पर रानाडे ने नेता के रूप

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में उसका संचालन ऐसी योग्यता और सहानुभूतियुक्त तरीके से किया कि उसका प्रभाव सर्वसाधारण पर भी काफी पड़ा और उसके द्वारा विधवा-विवाह स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार आदि के अनेक समाज-सुधार सम्बन्धी कार्य प्रशंसनीय रूप में किये जाते रहे।

यद्यपि 'प्रार्थना-समाज' और 'आर्यसमाज' के सिद्धान्तों में बहुत अन्तर था, फिर भी रानाडे एक सुधारक की हैसियत से आर्यसमाज के प्रति भी सहानुभूति रखते थे। जब स्वामी दयानन्द प्रथम बार पूना पहुँचे और उन्होंने मूर्तिपूजा आदि के विरुद्ध कई व्याख्यान दिये, तो वहाँ के सनातनी उनसे बहुत चिढ़ गये। जब स्वामी जी पूना से जाने लगे तो उनके अनुयायिओं ने उनका एक बड़ा जलूस निकालने का विचार किया। पर उनकी संख्या बहुत थोड़ी थी और विरोधी लोग बहुत अधिक थे। उन्होंने अपना विचार श्री रानाडे के सम्मुख प्रकट किया तो वे सहयोग देने को तैयार हो गये। उन्होंने जलूस के सफलतापूर्वक निकलने का सब प्रबन्ध कर दिया।

पर विरोधी दल वालों को भी इसकी खबर मिल गई और उन्होंने स्वामी दयानन्द का अपमान करने के लिये उसी दिन 'गर्दभानन्दाचार्य' की सवारी निकालने का निश्चय किया। नियत समय पर दोनों दलों ने अपने-अपने जलूस निकाले। जब रानाडे को विरोधी दल द्वारा 'गर्दभानन्दाचार्य' की सवारी निकालने की खबर मिली तो वे जी खोलकर खूब हँसे। पर दोनों दलों में कोई संघर्ष न हो जाय, इसके लिये उन्होंने पुलिस का प्रबन्ध करा दिया और स्वयं भी स्वामी जी के जलूस के साथ चले। स्वामी जी का जलूस बड़ी शान के साथ निकाला गया था। उसमें सब से आगे एक पालकी में 'वेद-भगवान' विराजमान किये गये थे। उसके पीछे एक हाथी पर स्वामी दयानन्द को बिठाया गया था।

पहले तो विरोधियों ने खूब शोर-गुल मचाया और फिर गालियाँ बकने लगे। पर जब इससे कोई असर पड़ता न देखा तो वे रास्ते से कीचड़ उठाकर फेंकने लगे। उस दिन वर्षा भी हो गई थी, इसलिये कीचड़ हर जगह तैयारथा। कुछ कीचड़ पुलिस वालों पर भी पड़ी तो वे विरोधियों को पीटने को तैयार हुये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर रानाडे ने पहले ही कह रखा था कि जब तक हम न कहें तब तक मार-पीट मत करना। इस कारण सिपाही चुप रहे। पर जब विरोधी लोग ईंट पत्थर फेंकने लगे और कई ईंट तो रानाडे को भी लगीं, तब उन्होंने सिपाहियों से भीड़ को शान्तिपूर्वक भगा देने को कहा। सिपाहियों ने जब लोगों को हटाया तो वे भाग खड़े हुये।

इस तरह जलूस किसी तरह अन्त तक पहुँच गया। रानाडे जब घर पहुँचे तो उनके कपड़े कीचड़ से खराब हो गये थे। लोगों ने उनसे कहा कि "आपके साथ तो इतने सिपाही थे, आप पर कीचड़ कैसे पड़ गया ?" रानाडे ने उत्तर दिया--जब मैं जलूस में था तो अन्य लोगों के साथ कीचड़ मुझ पर पड़ना ही था। पर इसमें लड़ाई-झगड़ा अथवा मुकदमा चलाने की कोई बात नहीं। इस तरह के सार्वजनिक कार्यों में मतभेद और झड़प होती रहती हैं। ऐसे मामलों में मानापमान का विचार नहीं किया जाता।"

सादगी और निरभिमानिता—

श्री रानाडे की सादगी और निरभिमानिता इतनी अधिक थी कि आज तक उसके कई उदाहरण स्कूल की पुस्तकों में पढ़ाये जाते हैं। इनमें से एक लकड़ी बेचने वाली बुढ़िया की घटना आम तौर से प्रसिद्ध है। एक दिन शाम के समय जब रानाडे पैदल ही टहलने जा रहे थे तो उस बुढ़िया ने इनको साधारण वेष-भूषा में देखकर कोई मामूली आदमी समझा और कहा--"दादा ! मेरे इस बोझ को उठवादे !" रानाडे ने खुशी से यह काम पूरा कर दिया। इसी प्रकार एक अन्य अवसर पर उन्होंने एक घास का बोझा किसी के सर पर रखवा दिया था। एक बार एक बनिया ने भी उनको सामान्य ब्राह्मण समझकर दान में सीधा लेने को कहा। इन्होंने उससे सीधा ले लिया और आगे जाकर किसी भिखारी को सब सामग्री दे दी।

आज से अस्सी वर्ष पहले, जिस समय की ये घटनायें हैं, हाईकोर्ट का जज होना कोई छोटी बात न थी। उस समय तक इतना ऊँचा पद पाने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वाले भारतवासियों की संख्या समस्त देश में दस-बीस से अधिक न थी। उस समय उनको जो डेढ़ हजार रुपये के लगभग वेतन मिलता था वह वर्तमान समय के बाजार-भावों के अनुसार कम से कम २० हजार रु० के बराबर था। वैसे जनता में भी उनका इतना सम्मान था कि कोई सभा-संस्था या सार्वजनिक कार्य-क्रम ऐसा न होता था, जहाँ रानाडे को निमंत्रित न किया जाय। पर इस सब के होते हुए भी उनमें किसी प्रकार के अहंकार अथवा प्रदर्शन का भाव का लेश मात्र उत्पन्न नहीं हुआ था, और वे प्रायः जनता के एक सामान्य व्यक्ति की तरह ही रहते थे।

ऊपर जो तीन घटनायें दी गई हैं, वे तो अनजान और गरीब लोगों की हैं जो इनके महत्व और दर्जे को समझने के योग्य ही न थे। पर अन्य अवसरों पर भी वे ऐसी ही सरलता और सादगी का परिचय देते थे। वे सामान्य लोगों के साथ भी ऐसी नम्रता से बात करते थे मानों वे कोई उनसे छोटे व्यक्ति हैं। वे सन् १८९३ की लाहौर कांग्रेस में नेता के रूप में गये थे। उसी अवसर पर डी० ए० वी० कालेज में आर्य समाज की तरफ से बड़ी भारी सभा की गई जिसमें प्रसिद्ध वक्ता श्री द्वारकादास ने एक महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया। श्री रानाडे भी इस सभा में शामिल हुए, पर मंच पर जाने के बजाय अन्य दर्शकों की तरह चुपचाप जाकर एक कोने में बैठ गये। कुछ देर बाद लाला लाजपत राय ने उनको देख लिया। उन्होंने कहा—

"भाइयो, यह बड़ी प्रसन्नता और सौभाग्य की बात है कि श्री रानाडे भी हमारे इस जलसे में मौजूद हैं। रानाडे वास्तव में उन महापुरुषों में से हैं जिनका भारत को गर्व है। यहाँ पर मैं इतना और कह देना चाहता हूँ कि वे उन महापुरुषों में से भी हैं जो स्वयं स्वामी दयानन्द सरस्वती के सम्पर्क में आये हैं।" इस प्रकार जनता को जब रानाडे के वहाँ होने का पता चला तो सब ने बड़ी प्रसन्नता से तालियाँ बजाकर उनका स्वागत किया।

विरोधी से भी मैत्री-भाव—

श्री कुण्टे पूना के सार्वजनिक कार्यकर्ता थे। वे श्री रानाडे के साथ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पढ़े थे और दोनों में पर्याप्त घनिष्ठता थी। पर जब सन् १८८५ में लार्ड-रिपन ने भारतवासियों को नागरिक स्वशासन का अधिकार दिया और विभिन्न नगरों में 'नगर पालिकाओं' के चुनाव का प्रश्न उठ खड़ा हुआ तो कुण्टे और रानाडे में मतभेद हो गया। रानाडे का कहना था कि नगरपालिका में अधिकांश सदस्य भारतीय रहने चाहिये जिससे वे स्वशासन की शिक्षा प्राप्त कर सकें और आत्म निर्भर होने की योग्यता प्राप्त करने का अवसर पा सकें। पर कुण्टे महोदय भारतवासियों को इस योग्य नहीं समझते थे और उनका मत था कि नगर पालिकाओं में अधिक संख्या अंगरेज अफसरों की होनी चाहिये। एक दिन श्री रानाडे ने कुण्टे को इस प्रकार का प्रतिगामी मत रखने के लिये फटकारा तो वह अहम्मन्यता वश इनके विरोधी बन गये और नित्य-प्रति सार्वजनिक सभाओं का आयोजन करके रानाडे के मत का खण्डन करने लगे। साथ ही रानाडे के ऊपर तरह---तरह के उचित--अनुचित आक्षेप करने लगे।

अपने एक मित्र कहलाने वाले की यह करतूत देखकर रानाडे को बड़ा दुःख हुआ। उनको अपने ऊपर होने वाले आक्षेपों की चिन्ता नहीं थी, पर उनके आपस के झगड़े को देखकर अँगरेज भारतवासियों को स्वायत्त शासन के भी अयोग्य समझने लगेंगे इसका खेद उनको अवश्य था। इस लिये जब उन्होंने इस मामले को बढ़ते देखा तो इसे समाप्त करने का एक दूसरा ही उपाय सोचा।

उस दिन शाम को जब कुण्टे महोदय एक सार्वजनिक सभा में रानाडे पर आक्षेपों की बौछार कर रहे थे तो ये भी सभा में जा पहुँचे और भाषण सुनने लगे। जब भाषण पूरा होकर सभा समाप्त हो गई तो ये कुण्टे के पास चले गये। पर वे इतने नाराज थे कि उन्होंने रानाडे की तरफ पीठ कर ली। यह देखकर रानाडे उनके और समीप चले गये और जबर्दस्ती बातचीत करने लग गये। इसके पश्चात् उन्होंने कुण्टे से अपनी गाड़ी में बैठकर चलने को कहा। पर कुण्टे ने अस्वीकार कर दिया और वे अपनी गाड़ी में ही बैठकर जाने लगे। तब रानाडे स्वयम् उनकी गाड़ी में जा बैठे और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कहने लगे कि "अगर आप मेरी गाड़ी से नहीं बैठ सकते हैं तो मैं ही आपकी गाड़ी में बैठकर चलूँगा।" इसके पश्चात् दोनों में बातचीत होने लगी और रानाडे ने अपना मत इस प्रकार समझाया कि कुण्टे ने उनका विरोध छोड़ दिया और वे अँगरेजों बजाय भारतवासियों के सदस्य बनने के अनुकूल हो गये।

इस सामान्य घटना ने यह सिद्ध कर दिया कि सच्चे महापुरुषों का क्या लक्षण होता है? रानाडे ने सबसे पहले समाज के हित पर ध्यान दिया और नम्रता का व्यवहार करके बिगड़ती बात को बना लिया। ऐसी घटनाओं में प्रायः देखा जाता है कि दोनों पक्ष सिद्धांत की उतनी चिन्ता नहीं करते जितनी कि अपनी टेक और शान की। लिये बराबर एक दूसरे से खिचते चले जाते हैं और पुराने मित्र प्रायः घोर शत्रु के रूप में परिणित हो जाते हैं। पर श्री रानाडे में मैत्री भाव की इतनी प्रबलता थी कि उन्होंने एक हठवादी और तुनुक मिजाज व्यक्ति को भी अपने मधुर व्यवहार द्वारा विरोधी की अपेक्षा मित्र और सहायक बना लिया।

श्री रानाडे का यह कार्य सार्वजनिक कार्यकर्ताओं के लिये निस्सन्देह अत्यन्त शिक्षाप्रद है। अनेक लोग देश सेवा और जन-कल्याण का नाम लेते हुये भी 'झूँठे बड़प्पन' के भाव से इतने अभिभूत रहते हैं, कि एक साधारण सी बात पर आपस में मतभेद पैदा कर लेते हैं और अपनी टेक कायम रखने के लिये सार्वजनिक कार्य को बिगाड़ देते हैं। यह एक बड़ी गलत प्रवृत्ति है जो प्रायः सार्वजनिक कार्य कर्ताओं में पाई जाती है। इस प्रकार के व्यक्ति को देश तथा समाज का सेवक तो कहा ही नहीं जा सकता। वे तो अपनी शान और गौरव के भूखे होते हैं, और उनको कायम रखने के लिए मूल उद्देश्य को नष्ट हो जाने देते हैं। श्री रानडे ने अपने प्रत्यक्ष उदाहरण द्वारा दिखला दिया कि यदि कोई व्यक्ति गलत रास्ते पर जा रहा हो तो यह आवश्यक नहीं कि हम भी वैसी ही गलती करके उसका मुकाबला करें। ऐसे अवसर पर झूँठी शान को त्याग कर, नम्रता और विनय से काम लेकर बिगड़ते काम को बना लेने में ही सच्ची योग्यता और महानता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नाई को गुरु बनाया—

सन् १८८७ में रानाडे को 'फायनेंस कमेटी' के कार्य के निमित्त शिमला से मद्रास तक भारत के सभी भागों में घूमना पड़ा। जब वे इस कार्य के लिये कलकत्ता में ठहरे हुये थे तो एक दिन एक बंगाली भाषा का अखबार बेचने वाला उनके बंगले में चला आया और कहने लगा 'आप इस समाचार पत्र के ग्राहक बन जाइये।'

रानाडे की पत्नी श्रीमती रमाबाई ने उससे कह दिया—"भाई, हमें तो यहाँ की भाषा आती नहीं, हम इस अखबार को लेकर क्या करेंगे ?" पर अखबार बेचने वाले ने फिर वही बात रानाडे से कही।

रानाडे ने कहा—"अच्छा, आज का अखबार रख जाओ। इसके बाद एक सप्ताह ठहर कर आना और तब हमारा नाम ग्राहकों में लिख लेना"। जब अखबारवाला चला गया तो उन्होंने अपनी पत्नी से कहा—"हमें यहाँ कई महीने रहना है। इसलिये यहाँ की भाषा से परिचित न होना हमारे लिये लज्जा की बात होगी। तुमको यहाँ की भाषा सीख लेनी चाहिये।"

रमाबाई ने कहा—"जब बंगाली हम लोगों की भाषा नहीं है तो वह हमको बिना सीखे कैसे आ सकती है ? इसमें लज्जा की क्या बात है ?" फिर भी रानाडे उनसे कहते रहे—"नहीं, तुमको यह भाषा सीख लेना आवश्यक है।"

रमाबाई ने कुछ सोचकर उत्तर दिया—"अच्छा, मैं बंगाली सीख लूँगी, किन्तु आपसे ही सीखूँगी, और किसी अध्यापक से सीखने को तैयार नहीं हूँ।" वह जानती थी कि रानाडे तो बंगला भाषा जानते नहीं, और इस कारण यह बात यों ही रह जायगी।

रानाडे दूसरे ही दिन बाजार जाकर अंग्रेजी की मदद से बंगला सीखने की कितनी ही पुस्तकें खरीद लाये और उसी दिन से उन्होंने उस भाषा को सीखना आरम्भ कर दिया। दो दिन तक खूब परिश्रम करके उन्होंने कुछ जानकारी प्राप्त कर ली और तीसरे दिन से अपनी पत्नी को स्वयं बंगाली पढ़ाना आरम्भ कर दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक दिन जब रमाबाई बंगला पढ़ कर भीतर चली गईं और घर गृहस्थी का काम करने लगीं तो रानाडे एक नाई से हजामत बनवाने लग गये। पर बंगला भाषा की पुस्तक उस समय भी उनके हाथ में थी।

जब नाई हजामत बना रहा था तो रानाडे बंगला पुस्तक पढ़ते जाते थे और नाई से शब्दों का उच्चारण पूछते जाते थे। जब रमाबाई ने भीतर से बैठक में दो व्यक्तियों को बोलते सुना तो उसे कुछ आश्चर्य हुआ, क्योंकि घर में और कोई व्यक्ति न था। उसने दरवाजे से झांककर देखा तो रानाडे को नाई से पूछ-पूछ कर पुस्तक पढ़ते देखा। यह दृश्य देखकर उनको बड़ी हँसी आई और भीतर जाकर खूब हँसीं। जब नाई हजामत बनाकर चला गया तो उसने कमरे में आकर कहा—"वाह, मास्टर तो अच्छा मिला। मुझे तो मालूम पड़ता है कि आप भी दत्तात्रय की तरह चुन-चुन कर गुरु बना रहे हैं।"

पर इस घटना के बाद रमाबाई ने खूब ध्यान देकर बंगला पढ़ना आरम्भ किया और डेढ़ महीने में वे बंगला अच्छी तरह पढ़ने और समझने लग गईं। उन्होंने उस भाषा के अनेक सुन्दर उपन्यास और अन्य साहित्यिक पुस्तकें पढ़ डालीं।

यद्यपि दत्तात्रय की तरह चाहे जिसको गुरु बना लेने की बात रमाबाई ने हँसी में ही कही थी, पर वास्तव में उसमें बहुत कुछ सचाई थी। रानाडे जन्म से बड़े प्रतिभाशाली नहीं थे। छोटी अवस्था में तो उनके घर वाले उनको निरा आलसी और दब्बू समझते थे। स्कूल में भी उन्होंने कभी सबसे तेज छात्र होने का परिचय नहीं दिया। पर वे उद्योगी बड़े भारी थे और प्रत्येक बात को खूब ध्यान देकर सीखते थे और धैर्यपूर्वक अभ्यास करने का गुण उनमें बहुत अधिक था। यही कारण था कि साधारण बुद्धि वाले होने पर भी विद्या और अनुभव में अपने से अधिक बुद्धिमानों की अपेक्षा कहीं आगे बढ़ गये। वे अपनी लगन और धुन के पक्के थे और जिस काम में हाथ लगाते थे उसे अच्छी तरह पूरा करके ही छोड़ते थे। यही कारण है कि उनको कानून की मूल बातों का ज्ञान बहुत अधिक था और वे अपने सामने आने वाले मुकदमों का फैसला ऐसी मेहनत और ईमानदारी से लिखते थे कि किसी को उसमें एक अक्षर बदलने की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गुंजायश नहीं मिलती थी । इसी से न्याय-विभाग में वे उन्नति करते हुये सर्वोच्च पद पर जा पहुँचे ।

रानाडे का पारिवारिक जीवन--

जैसा अन्यत्र कहा जा चुका है रानाडे ने अपनी पहली पत्नी सखूबाई का देहान्त हो जाने पर पिता के दबाव से विधवा-विवाह न करके रमाबाई के साथ विवाह किया था । विवाह के समय तक रमाबाई कुछ भी पढ़ी-लिखी न थी । पर बाद में रानाडे ने उनके पढ़ने का बहुत अच्छा प्रबन्ध कर दिया । वे स्वयं भी रात्रि में कुछ समय देकर उनको पढ़ाते थे और एक अध्यापक भी नियुक्त कर दिया था । इससे कुछ ही वर्षों में उन्होंने मराठी तथा अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया । पर इस कार्य में घर की पुराने ढंग की स्त्रियों के कारण उन्हें बड़ी परेशानी उठानी पड़ी । इन सब बातों का वर्णन स्वयं रमाबाई ने अपनी पुस्तक "हमारे जीवन की स्मृतियाँ" में किया है । यह ग्रन्थ मराठी में अपने ढंग का अनोखा माना जाता है । इसकी भूमिका गोखले ने लिखी है और इससे रानाडे और रमाबाई के जीवन की अनेक घटनाओं पर प्रकाश पड़ता है, जिनका वर्णन और किसी तरह मालूम नहीं हो सकता था ।

रमाबाई को विद्या प्राप्त करने में वास्तव में बड़ा संघर्ष करना पड़ा था और रूढ़िवादी स्त्रियों के कारण कुछ कष्ट भी उठाने पड़े थे । रमाबाई ने लिखा है कि "रानाडे की माता पढ़ने-लिखने के कारण उसे प्रायः डाटती-फटकारती रहती थी और उनकी बहिन (रमाबाई की ननद) भी उसको प्रायः उल्टी - सीधी बातें सुनाया करती थी । कई बार तो ये स्त्रियाँ उनको घर से निकल जाने को कहती थीं, यद्यपि ये सभी सम्बन्धी स्त्रियाँ एक दृष्टि से रानाडे के आश्रित ही थीं । पर रानाडे ने मर्यादा का ख्याल रखकर उनके सामने पत्नी के पक्ष में एक शब्द तक मुँह से नहीं निकाला । वे एकान्त में रमाबाई को ही समझाते और शान्त करते रहते थे ।

जब कभी ये स्त्रियाँ रमाबाई को अंगरेजी पढ़ते-लिखते देखतीं तब तो बहुत ही उग्ररूप धारण कर लेती थीं । और ऐसी-ऐसी बातें सुनातीं जिनके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कारण दुःखी होकर उसे घण्टों रोना पड़ता था। एक दिन वह अङ्गरेजी का का अखबार पढ़ते हुऐ अपने कमरे से बाहर निकल आई। इस पर रानाडे की छोटी बहिन ने उसे सैकड़ों खरी-खोटी सुनाईं और कहा-"तुम्हारा स्थान ऊपर है वहाँ पर खूब नाचो और पढ़ो।"

एक अवसर पर जब लड़कियों के एक स्कूल की स्थापना के प्रश्न को लेकर सभा की गई तो उसमें बम्बई के गवर्नर भी पधारे। उस समय गवर्नर को दिये जाने वाले एड्रेस को पढ़ने का भार रमाबाई को दिया गया। रानाडे ने इसे स्वीकार कर लिया और उनकी आज्ञा से रमाबाई ने सभा में उसे पढ़ कर सुना दिया।

इस का हाल जब रानाडे की ताई ने सुना तो वे बहुत बिगड़ीं और और कहने लगीं "अब की स्त्रियों की बात ही निराली है। वे पुरुषों के सामने बोलने में भी नहीं शर्मातीं। पहले की स्त्रियाँ तो पुरुषों के सामने जाने में भी लजाती रहीं। पर तुम क्या करो, समय ही ऐसा आ गया है! पहले तो धार्मिक प्रयोजनों ही के लिये स्त्री-पुरुष एकत्रित होते थे। पुराण सुनने के लिये अवश्य एक साथ जाते थे परन्तु वहाँ भी अलग-अलग बैठते थे। अब तो औरतें मर्दों की भी नाक काट रही हैं और उनके साथ कुर्सी पर बैठने में बिल्कुल नहीं शर्मातीं।

"अब तो स्त्रियाँ पुरुषों की ही तरह पढ़ती-लिखती और सब कुछ करती हैं। तुम्हें क्या सूझी थी? हजारों पुरुषों के बीच में खड़ी होकर अङ्गरेजी पढ़ने में तुम्हें लाज नहीं आई? सच है पढ़ने-लिखने से औरतों की आँखों का पानी उतर जाता है। स्त्रियों को रामायण बाँचना ही बहुत है। बेटी, बुरा न मानो, अब भी अङ्गरेजी पढ़ना छोड़ दो तो अच्छा है। मुंह से कुछ बोलती नहीं। घर में जब मैं खूब बिगड़ती हूँ तो यह चुप रहती है, परन्तु बाहर जाकर कहाँ से इतनी ढिठाई सीख लेती है?" इन बातों को सुनकर रमाबाई को बड़ा कष्ट हुआ और वह बड़ी देर तक रोती रही।

रात्रि को घर आने पर जब रानाडे ने यह किस्सा सुना तो वे बहुत हँसे और रमाबाई को समझाते और धैर्य बँधाते हुये कहा—तुम्हें इन बातों से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दुःखी नहीं होना चाहिये। बल्कि तुम्हें तो और अधिक सहनशील होना चाहिये। वे चाहे जो कहें, उसका जवाब देने की तुम्हें जरूरत ही नहीं। अन्त में वे स्वयं चुप हो जायेंगी। मैं अच्छी तरह जनता हूँ कि इस प्रकार की बातों को सुनना और चुपचाप सहन करते रहना बड़ा कठिन है, पर इसी में तो तुम्हारी बड़ाई है, इसी में महत्ता है और तुम्हारा परम कल्याण है। यह सहनशीलता भविष्य में तुम्हें बड़ा काम देगी।"

अन्त में रानाडे का कहना सत्य हुआ। घर की पुरानी औरतें तो बक-झक करती हुई एक-एक करके चुप हो गईं, पर रमाबाई ने क्रमशः अपनी योग्यता इतनी बढ़ाली कि एक दिन वह देश की प्रसिद्ध विदुषी और नेत्री बन गईं। रानाडे के पास जो बहुत सी पुस्तकें समालोचनार्थ आया करती थीं, उनको वे ही पढ़कर सुनाया करती थीं और फिर उनके विचारों को स्वयं ही लिखा करती थीं। इससे रानाडे को पर्याप्त सहायता मिल जाती थी, क्योंकि कानून की परीक्षा पास करते समय उन्होंने इतनी अधिक पढ़ाई की थी कि उसके कारण उनकी आँखें कमजोर पड़ गई थीं और उनको लिखने-पढ़ने का काम करने में काफी जोर पड़ता था।

रमाबाई को सब तरह से योग्य देखकर उन्होंने घर का सारा प्रबन्ध उन्हीं के हाथ में दे दिया था। वे सब रुपया-पैसा लाकर उन्हीं को दे देते और वह-घर के आय-व्यय तथा नौकरों के वेतन आदि का हिसाब रखती थीं। वह मितव्ययिता के नियमों को जानती थीं, इसलिये थोड़े खर्च में घर की संतोषजनक व्यवस्था कर लेती थीं। रानाडे के खाने-पीने और स्वास्थ्य का भी वह ख्याल रखती थीं। इस प्रकार रानाडे उनके कारण अपने को सौभाग्यवान् समझने लगे थे। उन्होंने एक बार स्वयं रमाबाई की प्रशंसा करते हुए कहा था—

"रमाबाई की समझदारी, सहन-शक्ति, सहयोग-भावना और जीवन को उपयोगी तथा पूर्ण बनाने की चेष्टा ने मेरे अधूरेपन को दूर कर दिया। वह सच्चे अर्थों में मेरी जीवन-सहचरी है। वह उन समाज सुधारिकाओं में से हैं, जिन्होंने कटु आलोचनाओं की परवाह न करते हुए दुःखियों की सेवा को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपना ध्येय बनाया है ।

रानाडे की शिक्षा और प्रभाव से रमाबाई ने सार्वजनिक क्षेत्र में बहुत अधिक प्रगति की थी और यह कहा जा सकता है कि एक प्रकार से वे रानाडे के समाज सेवा कार्यक्रम को उनके देहान्त के पश्चात् भी बहुत संतोषजनक रीति से पूरा करती रहीं ।

भारतीय महिलाओं की उन्नति और सेवा करने के उद्देश्य से उन्होंने "महिला सेवा सदन" की स्थापना की और धीरे-धीरे इसकी शाखायें बम्बई नगर और प्रांत के अनेक नगरों में कायम हो गईं । इस संस्था के द्वारा महिलाओं को लिखने-पढ़ने, अच्छी गृहणी बनने और सामाजिक प्रगति करने में सहायता दी जाती थी । इस संस्था की तरफ से 'नर्सिङ्ग' और चिकित्सा की शाखाऐं खोली गईं जिनमें उच्च जाति की महिलायें और कन्याऐं सेवा करती थीं । इस संस्था के रूप में विधवाओं, दुखियों, बीमारों और सामाजिक अत्याचार पीड़ितों के लिये रमाबाई का नाम प्रेरणा का स्रोत बन गया । वे कहा करती थीं कि हमारा जीवन एक अमानत है, अमूल्य निधि है, इसको व्यर्थ के कार्यों में बर्बाद कर डालना या अपने को असमर्थ मानकर निकम्मा बना लेना कभी उचित नहीं कहा जा सकता ।

रानाडे के देहान्त होने पर रमाबाई को बड़ा शोक हुआ और एक वर्ष तक वे प्रायः घर में ही रहीं । इसके बाद उन्होंने पति की शिक्षा और उनके २७ वर्ष के सहवास की स्मृतियों को याद करके, अपना जीवन कष्टों से पीड़ित नारी समाज की सेवा के लिये अर्पित कर दिया । अपने पति की मृत्यु के पश्चात वे बीस वर्ष तक जीवित रहीं और इस बीच में उन्होंने प्रयत्न करके सुयोग्य महिला कार्य कर्तृयों का एक ऐसा दल तैयार किया जिसने दुःखी और अत्याचार पीड़ित नारियों की सेवा को ही अपना जीवन का ध्येय बना लिया और तरह-तरह से लाखों स्त्रियों को सहायता पहुँचाई ।

कठिन परिस्थितियों में राजनीतिक सेवा—

बहुत से लोग श्री रानाडे को एक विद्वान समाज सुधारक और न्याय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मूर्ति जज के रूप में ही जानते हैं। वे सोचते हैं कि सरकारी नौकरी करते हुए वे कोई महत्वपूर्ण राजनीतिक कार्य कैसे कर सकते होंगे ? पर यह रानाडे की एक प्रकार से अपूर्वता ही है कि हाइकोर्ट के जज जैसे उच्च सरकारी पद पर काम करते हुये भी उन्होंने भारत के राजनीतिक क्षेत्र में अपना चिरस्मरणीय स्थान बना लिया था। बहुत लोगों को यह बात कुछ आश्चर्यजनक जान पड़ेगी कि वे तिलक और गोखले दोनों के राजनीतिक गुरु थे। इन दोनों महान नेताओं ने, जिनको यदि तत्कालीन भारतीय राजनीति का उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव कहा जाये तो अनुचित न होगा, श्री रानाडे की बड़ी प्रशंसा की है और उनको अपना मार्ग-दर्शक स्वीकार किया है। लोकमान्य तिलक ने उनका स्वर्गवास होने पर अपने 'मराठा' पत्र में श्रद्धाञ्जलि देते हुये लिखा था—

"श्री रानाडे के समान महापुरुष-रत्न की मृत्यु से भारत की जो हानि हुई है, उसका ठीक-ठीक अनुमान करना कठिन है। वे अद्वितीय वक्ता थे, उत्तम तथा श्रेष्ठ ग्रन्थकार थे, प्रभावशाली समाज-संशोधक थे और प्रसिद्ध पंडित थे। उनकी राजनीतिक विवेचना महत्वपूर्ण हुआ करती थी। वे पारदर्शी विद्वान और जनता से सच्ची सहानुभूति रखने वाले एक पवित्र देशभक्त थे। वे उन्नीसवीं शताब्दी के एक ही आदमी थे। एक पूरी शताब्दी भी ऐसे मनुष्य को कठिनता से अपने गर्भ में रख सकती है। यदि वे अँगरेज होते तो ब्रिटिश मंत्रि-मण्डल में एक बहुत ऊँचा पद प्राप्त कर लेते। उन्होंने अनेक जन-कल्याणकारी संस्थाएँ स्थापित कीं और अनेक राष्ट्रीय कार्यकर्त्ताओं को तैयार किया।"

यह तो अन्यत्र बतलाया ही जा चुका है कि रानाडे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मूल संस्थापकों में से थे। यद्यपि भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में ह्यूम साहब को कांग्रेस का 'जन्मदाता' माना गया है, पर जानकार लोगों का यह भी कहना है कि ह्यूम साहब को इसकी सर्वप्रथम प्रेरणा देने वाले रानाडे ही थे। कुछ भी हो ह्यूम साहब भी रानाडे को 'गुरु महादेव" कह कर पुकारते थे। कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन से लेकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वे अपने जीवन के अन्त तक प्रत्येक अधिवेशन में सम्मिलित होते रहे और उसकी नीति का निर्धारण करने में विशेष सहयोग देते रहे। यद्यपि उन्होंने इस कार्य को ऐसी कुशलता और सावधानी के साथ किया कि सरकार को उनके विरुद्ध कुछ कहने का मौका न मिला, फिर भी जैसा हम जानते हैं अंग्रेज अधिकारी मन में उनसे असन्तुष्ट रहते थे और उनकी पदोन्नति में यथासंभव अड़ङ्गा लगाया करते थे।

सन् १९०० में कांग्रेस का अधिवेशन लाहौर में होने वाला था। बीमार होने पर भी वे कई अन्य नेताओं को साथ लेकर बम्बई आये, जहाँ सेगोखले तथा अन्य नेता भी उनके साथ जाने वाले थे। पर बम्बई पहुँचने पर उनकी बीमारी और बढ़ गई और उनको रोगशैया पर लिटा देना पड़ा। फिर भी उन दिन दोपहर को गोखले आदि नेताओं से कांग्रेस के कार्यक्रम आदि के सम्बन्ध में बातचीत करते रहे और कांग्रेस के लिये लाहौर चलने का निश्चय कर लिया। पर संध्या के समय बीमारी ने कठिन रूप धारण कर लिया और उनकी धर्म-पत्नी रमाबाई ऐसी स्थिति में यात्रा न करने का अनुरोध करने लगीं। गोखले आदि नेताओं ने भी हालत खराब देखकर न चलने को सम्मति दी। उसी समय वे डाक्टर भी आ गये जो उनकी चिकित्सा कर रहे थे। उन्होंने रानाडे को लाहौर जाने से मना कर दिया।

सबकी ऐसी सम्मति देखकर रानाडे की मुखाकृति उदास हो गई। उन्होंने गोखले की तरफ देखकर कहा—"कहो, अब क्या करूँ?" गोखले ने कहा—"इस सम्बन्ध में डाक्टर की सम्मति के अनुसार चलना ही ठीक है। कांगरेस में जैसा आप कहेंगे वैसा मैं कर दूँगा।"

अब कोई उपाय न देखकर रानाडे ने कहा—"अच्छा लो, अब कांग्रेस में तुम्ही मेरी ओर से भी काम करो। बहुत ही शीघ्र मैं इस संसार से उठ जाऊँगा। मेरे देहान्त के पश्चात् तो यह काम तुम्हें करना ही है।" अन्त में सब उपस्थित नेताओं ने यही निश्चय किया कि रानाडे लाहौर न जायें और उन्होंने भी इसे स्वीकार कर लिया। परन्तु इस विचार से उनको इतना कष्ट पहुँचा कि आँखों से आँसू बहने लगे और उन्होंने भरे हुये कण्ठ से कहा—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

"कांग्रेस में शामिल न होने का आज मेरा यह पहला ही अवसर है।"

गोखले ने कांग्रेस में श्री रानाडे का पत्र पढ़कर बड़ा प्रभावशाली भाषण किया। जब उस भाषण को रानाडे ने समाचारपत्रों में पढ़ा तो उन्होंने तुरन्त उनको एक पत्र द्वारा सूचित किया—"प्यारे गोखले ! समाचारपत्रों में तुम्हारे व्याख्यान को पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम भविष्य में भारत का भार उठा सकोगे। एक प्रकार से मैं भारत के भविष्य के सम्बन्ध में चिन्तित रहा करता था, परन्तु अब मेरी वह चिन्ता बहुत कम हो गई।

मातृभूमि के प्रति सेवा की यह आन्तरिक और अकृत्रिम भावना ही वह चीज है, जिसने श्री रानाडे को उन्नीसवीं शताब्दी का सर्वोत्कृष्ट देशभक्त बना दिया। लोग जानते थे कि विद्या, प्रतिभा, वाग्मिता, अध्यवसाय और राजनीतिक चतुरता की दृष्टि से उस समय कितने ही व्यक्ति रानाडे से बढ़े-चढ़े थे, पर उन्होंने अपने इन सब गुणों को जिस हार्दिक भावना से पूर्णतः देश-माता के चरणों में निछावर कर दिया उसका दूसरा उदाहरण मिलना कठिन था। यही कारण है उनको जनता तथा तत्कालीन राजनीतिक कार्यकर्ताओं की दृष्टि में भी महान बनाने वाला सिद्ध हुआ। हम भी अगर जन-सेवा के कार्य को सच्चे हृदय से अपनायें और कोई गुप्त या प्रकट स्वार्थ का भाव न रखकर अपनी सामर्थ्य और शक्तिभर इस सत्कार्य में सहयोग प्रदान करते रहें तो निस्सदेह ऐसी ही उच्च पदवी को प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं।

भारत को 'लकवा' मार गया है—

श्री रानाडे को अपने देश के छोटे-बड़े समस्त निवासियों के हित का ध्यान सदैव बना रहता था। वे जब किसी से बात-चीत करते थे तो उस चर्चा का सार यही होता था कि देश की कैसी दुर्दशा हो रही है और उसका सुधार किस प्रकार हो सकता है ? भारतवर्ष के महान इंजीनियर श्री विश्वश्वरैया एक दिन रानाडे के घर पर चाय पीने के लिये निमंत्रित किये गये। वे उन्हीं दिनों जापान का भ्रमण करके वापस आये थे। इसलिये स्वभावतः ही उनकी चर्चा का विषय जापान की प्रगति ही रहा। जापान, जो कुछ ही समय पहले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अन्य एशियाई देशों की तरह पिछड़ा हुआ माना जाता था, वहाँ के नये शासक मिकाडो के प्रयत्नों से आधुनिक देशों की पंक्ति में आ खड़ा हुआ और जीवन के सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति कर रहा था। रानाडे वहाँ का हाल सुनकर बड़े प्रभावित हुये और अपने घर के एक कमरे की तरफ इशारा करके कहने लगे—"क्या आप जानते हैं कि उस कमरे में मेरा एक मित्र ऐसे रोग से बीमार पड़ा है, जिससे सारा भारत पीड़ित है ?"

जब विश्वेश्वरैया जी ने इस बात को स्पष्ट करने को कहा तो उन्होंने बताया कि "इस कमरे में मेरे एक घनिष्ठ मित्र श्री वामन आबाराव जी मोडक लकवा से बीमार होकर पड़े हैं और मेरी समझ में इस समय भारत-वर्ष की दशा भी एक लकवे के बीमार की तरह ही है।"

इसी प्रकार दूसरी बार जब श्री विश्वेश्वरैया से उनकी भेंट पूना में प्रति वर्ष होने वाले 'दरबार' में हुई तो श्री रानाडे वहाँ बैठे हुये कितने ही सरदारों और जागीरदारों के सम्बन्ध में कई तरह के किस्से और उनके स्व-भाव की विचित्रतायें सुनाते रहे। इस पर विश्वेश्वरैया जी पूछा कि "क्या आप इन लोगों के यहाँ अक्सर आते-जाते रहते हैं ?" श्री रानाडे ने उत्तर दिया—'मैं कभी उनके यहाँ नहीं जाता। पर सरकारी मामलों में किसी प्रकार की मुश्किल आ पड़ने पर या अपनी जागीर में कोई समस्या खड़ी हो जाने पर वे परामर्श लेने को मेरे पास आते रहते हैं।"

श्री रानाडे की बातों से श्री विश्वेश्वरैया ने यह निष्कर्ष निकाला कि "वे अपने प्रदेश वालों के प्रिय नेता, मित्र व मार्ग दर्शक थे। उनमें आत्मसंयम योग्यता और देशभक्ति कूट-कूट कर भरी थी। इसी से अपने जीवन के अंतिम दिनों में वे भारत के सबसे बड़े नेताओं में गिने जाते थे।' मानवता का सबसे बड़ा लक्षण यही है कि मनुष्य अपने निकटवर्तियों का सदैव ख्याल रखे और उनको सद्प्रेरणा देकर कल्याणकारी मार्ग पर चलावे। जो व्यक्ति स्वार्थ अथवा अहंकार या आलस्यवश अपने पड़ौसियों, सजातीय बन्धुओं, देशवासियों के हित-अनहित का ख्याल नहीं रखते, और जन-कल्याण के कामों में अपनी शक्ति के अनुसार न्यूनाधिक भाग नहीं लेते उनको 'मनुष्य' कहना भी उचित नहीं और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नव सामाजिक प्रगति के लाभों का उपभोग करने के अधिकारी हैं। सार्वजनिक सम्मान और सर्व साधारण की श्रद्धा भक्ति का पात्र वही हो सकता है जो अपने लाभ से पहले अपने अन्य भाइयों के लाभ का ध्यान रखता है।

भारतवासियों में इस प्रकार की भावना की कितनी कमी है, रानाड़े इस बात को अच्छी तरह समझते थे और इससे उन्हें बड़ा दुःख भी होता था। एक बार मद्रास कांग्रेस से पूना लौटते समय एक अंगरेज ने उनको सामान्य आदमी समझकर उनका सामान फर्स्ट क्लास की सीट पर से हटवा दिया। जब उनके साथियों ने इस बात के लिये मुकदमा चलाकर उस अंगरेज को दण्ड दिलाने पर जोर दिया तो रानाड़े ने कहा —

"ऐसी बातों पर लड़ना-झगड़ना व्यर्थ है। यह सच है कि लगभग सभी अंगरेज हम लोगों को जंगली आदमी समझते हैं। पर क्या इस दृष्टि से, हम लोगों का आचरण अच्छा है? हम अछूतों के साथ कैसा बर्ताव करते हैं? कई जाति वालों को हम छूते भी नहीं। मैं पूछता हूँ कि क्या वे जानवरों से भी गये गुजरे हैं? क्या हम सदा उनको पैरों के नीचे ही कुचलते रहेंगे? यदि हम लोगों की यह दशा है तो किस मुँह से हम भारत की शासक अंगरेज जाति की निन्दा कर सकते हैं।

उनके इस प्रकार के उद्‌गार यह बतलाते हैं कि निस्सन्देह उनको सदा देशकीचिन्ता लगी रहती थी और वे अपनेको देश तथा समाज से अभिन्न समझते थे। आज इसी मनोवृत्ति के अभाव के कारण हमारे देशवासियों में नागरिकता के उत्तरदायित्व की बड़ी कमी दिखलाई पड़ रही है, जिसके फलस्वरूप देशोत्थान के मार्ग में नई नई कठिनाइयाँ आती रहती हैं।

राजनैतिक सुधारों से पहले समाज सुधार—

यद्यपि देश में रानाडे मुख्य रूप से एक राजनीतिक नेता के ही रूप में प्रसिद्ध हैं, पर समाज-सुधार के कार्यों में वे भी किसी से पीछे न थे। यों वे एक पक्के हिन्दू थे और उन्होंने हिन्दू धर्म तथा आस्तिकवाद पर बहुत कुछ लिखा है, तो भी वे धर्म के नाम पर हानिकारक सामाजिक रूढ़ियों का समर्थन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करने को तैयार न थे। उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों का अच्छी तरह अध्ययन किया था और इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि जब तक यहाँ के निवासी धार्मिक अन्ध विश्वासों में पड़े रहेंगे और सामाजिक कुरीतियों से उनका पीछा न छूटेगा तब तक उनमें चरित्रबल न आयेगा और इसके बिना राजनैतिक उन्नति होना असम्भव है। सन् १९०० में सितारा में होने वाली "समाज-सुधार कान्फरेंस" में भाषण करते हुये उन्होंने कहा था—

"जब तक हम अपनी जातीय कुरीतियों का सुधार न करेंगे तब तक राजनैतिक अधिकारों के प्राप्त करने की इच्छा व्यर्थ है। सामाजिक नियमों का आधार उदारता होनी चाहिये। सामाजिक नियमों के सुधार से ही आर्थिक धार्मिक तथा राजनैतिक सुधार सम्भव हो सकते हैं।"

इसी मान्यता के कारण वे स्त्री-शिक्षा के पूर्ण समर्थक थे और कहते थे कि जब तक हमारी मातायें शिक्षित न होंगी तब तक जाति प्रगति नहीं कर सकती। यदि स्त्रियाँ अशिक्षित और कुसंस्काराच्छन्न बनी रहीं तो उनकी सन्तान में भी वे दुर्गुण न्यूनाधिक मात्रा में बने रहेंगे। इसलिये देश की समस्त समस्याओं और सुधारों का आधार स्त्री शिक्षा पर ही है।

वे छुआछूत के भी बड़े विरोधी थे। दक्षिण के ब्राह्मणों में इस प्रकार की मनोवृत्ति उत्तर भारत की अपेक्षा भी बहुत अधिक जड़ जमाये हुये है और अछूत कहे जाने वालों के प्रति उनका व्यवहार बड़ा अमानवतापूर्ण होता है। रानाडे इस प्रकार की विषमता और अन्यायपूर्ण व्यवहार के बहुत विरुद्ध थे। वे कहते थे कि प्राचीन शास्त्रों में इस प्रकार के भेदभाव का प्रतिपादन कहीं नहीं किया गया है। वे समुद्रयात्रा के भी समर्थक थे और इसका विरोध करना हानिकारक बतलाते थे। यद्यपि आज यह समस्या समाप्त हो गई है पर रानाडे के समय में इसी के कारण अनेक लोगों को जाति बाहर कर दिया जाता था।

रानाडे का देशव्यापी सम्मान—

रानाडे के इन्हीं देवोपम गुणों का प्रभाव था कि सन् १९०० में जब वे अधिक बीमार हुये और बचने की आशा क्षीण हो गई तो समस्त देश में एक चिन्ता की लहर व्याप्त हो गई। सरकारी नौकरी के कर्तव्यों का सत्यनिष्ठा-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पूर्वक पालन करने के साथ जन-सेवा की बीसियों संस्थाओं में लगातार परिश्रम करते रहने से स्वास्थ्य बहुत निर्बल पड़ गया था। अन्यथा पैतृक रूप से वे काफी स्वस्थ्य और सशक्त थे। उनके बड़ा भास्करराव के विषय में कहा जाता था कि वे ६५ वर्ष की आयु में भी कूदकर घोड़े पर बैठ जाते थे। इस कारण श्री रानाडे का शरीर - संगठन भी आरम्भ में काफी सुदृढ़ था। पर उन्होंने देश और समाज की आवश्यकताओं को देखते हुये एक के बाद एक इतने कार्यों का बोझा अपने ऊपर उठा लिया कि उनको सदैव शक्ति से अधिक कार्य करना पड़ा जिससे उनका स्वास्थ्य भंग हो गया।

वे कितने सेवा परायण और परोपकारी स्वभाव के व्यक्ति थे इसका पता उस घटना से लगता है जो उनकी मृत्यु के दिन ही हुई। १६ जनवरी १६०१ को जब कि वे बम्बई में बीमार पड़े थे और डाक्टरी इलाज हो रहा था उनको तबियत कुछ अच्छी जान पड़ी। और वे बाहर निकलकर कुछ दूर टहल भीआये। पर उसी समय उन्होंने अपने एक पुराने साथी श्रीकान्तिचन्द्रमुकर्जी की मृत्यु का समाचार सुना। इससे पहले की अनेक स्मृतियाँ उनको स्मरण हो आईं, शायद उन्होंने इसे अपने लिये भी चिर विदाई का संदेश समझ लिया।

कुछ देर बाद भाटिया-समाज के कई व्यक्ति एक विधवा-विवाह के सम्बन्ध में इनकी सम्मति लेने आ गये। डाक्टरों तथा रमाबाई की राय हुई कि इससमय उन्हें अधिक बोलना नहीं चाहिये। पर रानाडे ने किसी की एक न सुनी और उन लोगों को बुलाकर बातचीत करने लगे।

मालूम हुआ कि भाटिया जाति में सबसे पहले एक विधवा-विवाह होने जारहा है पर दूसरे पक्ष वाले उसके विरुद्ध हर तरह से आन्दोलन कर रहे हैं। रानाडे ने इस विधवा-विवाह को खूब धूमधाम से करने की सलाह दी, जिससे लोगों के मन का संकोच दूर हो सके। अन्त में उन लोगों ने कहा—"यदि इस अवसर पर गवर्नर की धर्मपत्नी को निमंत्रित कियाजाय तो कैसा रहे?"

रानाडे ने कहा—"अवश्य! उनको तो अवश्य ही निमंत्रित करना चाहिये।" तब उन लोगों ने रमाबाई से ही गवर्नर की पत्नी को निमंत्रित करने की प्रार्थना की।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर इस समय रमाबाई रानाडे की निरन्तर गिरती हुई दशा को देख रही थीं और उनके पास से एक क्षण को भी हटना नहीं चाहती थीं। रानाडे ने उनके इस मनोभाव को ताड़ लिया और कहा "हाँ, इनका काम अवश्य करदो, यह एक बड़े धर्म का, एक जीवन के उद्धार का काम है"। रमाबाई ने कहा, अच्छा, अगर आपकी तबियत ठीक रही तो मैं ऐसा ही करूँगी।

पर इस के कुछ ही देर बाद रानाडे के हृदय का दर्द बढ़ गया और कुछ समय बाद तो उसने ऐसा भयंकर रूप धारण करलिया कि रानाडे के मुख से अकस्मात् ये शब्द निकल पडे —"इस दर्द से तो मरना ही अच्छा है।"

देहान्त के पश्चात् श्री रानाडे की शवयात्रा में बम्बई के जिन हजारों व्यक्तियों ने भाग लिया उनमें केवल हिन्दू ही नहीं थे, वरन् कितने ही मुसलमान, ईसाई, पारसी भी सम्मिलित थे। कितने ही अंगरेज भी शोक प्रकाशित करने को आये, जिनमें सर्व प्रथम बम्बई हाईकोर्ट के चीफजास्टिस सर लारेंस थे।

इसके कुछ समय पश्चात् रानाडे की स्मृति-रक्षा के लिए जो सभा की गई उसका सभापतित्व बम्बई के गवर्नर लार्ड नार्थकोर्ट ने किया था। उस समय श्री गोखले ने कहा कि लगभग ४० वर्ष से श्री रानाडे हमारे उपकारार्थ परिश्रम करते रहे। उनकी न्यायप्रियता और देशभक्ति अद्वितीय थी। भारतीयों में उनसे अधिक सच्चा समाज-सेवक मिलना कठिन है। वे सभी धर्म और जातियों के लोगों से हार्दिक सहानुभूति रखते थे। वे देश के बडे भारी नेता थे और संसार के सर्वश्रेष्ठ नेताओं में जिन गुणों की आवश्यकता होती है, वे सब गुण रानाडे में पाये जाते थे।

वास्तव में संसार में गुणों की ही पूजा होती है। सच्चा और स्थायी बडप्पन उन्हीं महापुरुषों को प्राप्त होता है जो दूसरों के लिये निष्काम भाव से परिश्रम और कष्ट सहन करते हैं।

मुद्रक:—युगनिर्माण प्रेस, गायत्री तपोभूमि, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन-वृत्तान्त जन मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मंगल का मूल आधार है। इसलिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन कथाओं की अधिकाधिक जानकारी जनकल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवं आवश्यक मानी जाती है।

युग-निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है उसमें महामानवों के जीवन चरित्रों की सीरीज को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिख कर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयं पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को इसे पढ़ावें, सुनावें।

प्रकाशक—'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पै०

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें : http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org